दिनांक - 15/02/24 अध्ययन सामग्री
(गुरुवार) स्नातक भाग III,
हिन्दी सम्मान

डॉ० बजरंग प्रताप केसरी, हिन्दी विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

दीपक अलंकार :- प्रस्तुत और अप्रस्तुत, दोनों का एक धर्म से सम्बन्ध बताना दीपक अलंकार कहलाता है। यह अलंकार दीपक न्याय पर आधारित है। जिस प्रकार एक स्थान पर रखा दीपक चारों ओर अपना आलोक बिखेरता है, उसी प्रकार दीपक अलंकार में प्रस्तुत (उपमेय) और अप्रस्तुत (उपमान) में एक धर्म का कथन होता है। दीपक की समानता के कारण ही इस अलंकार को दीपक अलंकार कहा जाता है।

यथा- लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े।
लखा न काहु देख सब ठाढ़े॥

यहाँ राम (एक कारक) के द्वारा धनुष को हाथ में लेना, उस पर रोदा चढ़ाना, रोदा खींचना आदि अनेक क्रियाओं को सम्पन्न करने से कारक दीपक अलंकार घटित होता है।

(ii) बरसहिं सुमन हनहिं हन देवा।
नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा॥

यहाँ देवताओं के द्वारा पल-पल पुष्प वृष्टि करना, नाचने और गाने में कारक दीपक अलंकार की छटा अवलोकित होती है। देवता गण (कारक) के द्वारा क्षण-क्षण फूल बरसाने, नाचने, गाने की अनेक क्रियायें एक साथ सम्पन्न हो रही हैं।